अध्याय सप्तम
उपसंहार

आज हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श केवल स्त्री विमर्श पर आधारित है। जो महिलाओं की स्थिति को बयाँ करते हैं। नारी के अस्तित्व की पहचान को ढूँढता स्त्रीवादी लेखन इसका प्रमुख आधार माना जा सकता है। स्त्रीवादी लेखन और स्त्री-विमर्श का आधार ही हमारे शोध के महत्व को प्रतिपादित करता है। अनामिका के काव्य में नारी की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थिति को मुक्त अभिव्यक्ति मिली हैं। पितृसत्तात्मकता का प्रतिरोध, स्वातंत्र प्रेम संबंध, यौन स्वातंत्र्य, स्त्री मुक्ति, स्त्री अस्मिता की तलाश आदि को उकेरा गया है। नारी का स्व पहले हाशिये पर रख दिया जाता था। वह केवल पुत्री, पत्नी और माँ के रूप में ही स्वीकार्य थी।

महादेवी वर्मा का भी मानना है कि- "आज हिन्दू स्त्री भी शव के समान ही नि:स्पन्दन है। संस्कारों ने उसे पक्षाघात के रोगी के समान जड़ कर दिया है। अत: अपने सुख-दुख को चेष्टाओं द्वारा प्रकट करने में भी वह असमर्थ है।"

समकालीन दौर में कविता तथा अन्य सृजनात्मक क्षेत्रों में नारी की स्वतंत्रता पर बल देने वाला स्वर आज बुलन्द है। शताब्दियों से नारी के प्रति हो रहे शोषण को नारीवाद ने प्रोत्साहन प्रदान किया है। समकालीन कविता को दिशा देने वाले रघुवीर सहाय ने भी माना है कि- "किसी मूर्ख की ही परिणीता निज घर बार बसाइए। होयँ कटीली आँखें गीली तड़की सीली, तबीयत ढीली घर की सबसे बड़ी पतीली भरकर भात पसारिए।"

अनामिका ने स्त्री जीवन के भीतर के भयावह सच को बहुत सजग ढंग के काव्यानुभूति में परिवर्तित कर एक नये रूप में, नये अर्थ में, आग्रह भरे तेवर के साथ प्रस्तुत किया हैं। आज हिन्दी साहित्य में अनेक विमर्श का आधार स्त्री विमर्श है। क्योंकि स्त्री आज भी मुक्ति के लिए छटपटा रही है। समकालीन स्त्री कवयित्रियों में शैल कुमारी, मीनाक्षी, रजनी, कात्यायनी, प्रभा खेतान आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी कवयित्री अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री की भूमिका को विविध पहलूओं के माध्यम से स्पष्ट किया है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में स्त्री की क्या छवि है, उसे उकेरा है। अनामिका की प्रमुख काव्य रचनाएँ- 'शीतल स्पर्श एक धूप', 'गलत पते की चिट्ठी', 'समय के शहर में', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप', 'कविता में औरत', 'खुरदुरी हथेलियाँ', 'दूबधान' प्रमुख हैं। अनामिका ने अपने काव्य में संवादमय शैली, आत्मकथात्मक शैली, मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया हैं।

अनामिका के काव्य में स्त्री संदर्भ के विविध रूपों को देखा जा सकता है।

1. स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
2. स्त्री विमर्श का सिंहावलोकन वैश्विक परिदृश्य में करना।
3. भारतीय परिवेश में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
4. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
5. स्वतन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
6. समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को परिभाषित करना।
7. अनामिका के काव्य में स्त्री विमर्श के स्वरूप को उद्घाटित करना है।
8. अनामिका ने काव्य के माध्यम से समाज में व्याप्त स्त्री के स्वरूप को समझना है।
9. अनामिका के काव्य में महिला लेखन की परम्परा में स्त्री छवि को समझना है।
10. अनामिका के काव्य में पुरुष सत्ता के स्वरूप को देखना है।
11. अनामिका के काव्य में स्त्री शोषण की स्थिति का अवलोकन करना है।

स्त्री ईश्वर की एक ऐसी अद्भुत रचना है जिसके भीतर दया, ममता, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, संवेदना, करुणा, कोमलता, नाजुकता आदि गुण भरे पड़े हैं किन्तु पुरुष अपने अत्याचारों और अभ्रद व्यवहार से उसी कोमलांगना को कठोर बनने के लिए विवश करता हैं। स्त्री के अनेक रूप हमारे सामने आये और धुंधले होते चले गये। स्त्री माँ, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में सदा ही पुरुष के साथ रहती हैं। स्त्री का कोई भी रूप हमारे सामने आया हो किन्तु पुरुष ने उसे केवल छलने का कार्य ही किया है। कोई भी काल रहा हो स्त्री छल से बच नहीं सकी है।

साहित्य का संबंध संवेदना से होता है। इसलिए संवेदनाहीन साहित्य का कोई मूल्य नहीं होता है। साहित्य की बड़ी उपयोगिता या सार्थकता इस बात से मानी जाती है कि यह हमारी संवेदना का विस्तार करती है। संवेदना तो जीव-जंतु की मजबूरी है।

हिन्दी साहित्य कोश में संवेदना को परिभाषित करते हुए कहा गया है- ‘‘साधारणत: संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। मूलत: वेदना या संवेदना का अर्थ ज्ञान या ज्ञानेंद्रियों का अनुभव है। मनोविज्ञान में इसका यही अर्थ ग्रहण किया जाता है। उसकी संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह-रचना की सर्वप्रथम सचेतन प्रक्रिया है, जिससे हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है।"

नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार- ‘‘मन में होने वाले बोध या अनुभव, अनुभूत और किसी को कष्ट में देखकर मन में होने वाला दुख सहानुभूति।" संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर के अनुसार- ‘‘संवेदना अर्थात् सम-वेदना के द्योतक है।"[3]

आधुनिक और उत्तर आधुनिक काल में अनेक विमर्श उभर कर सामने आये। इन विमर्शों में प्रमुख रूप से आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, स्त्री चेतना आदि प्रमुख हैं।

आज की स्त्री जागरुक हो चुकी है, शिक्षित हो रही है, स्वावलम्बी बन रही है, वह अपने स्व एवं अस्मिता की तलाश में हैं। वह अनंत की जिजीविषा को उजागर करने का सफल प्रयास किया है- ‘‘आज स्त्री ने स्त्री के व्यक्तित्व को नवीन परिप्रेक्ष्य में उभारने का प्रयास किया है। यही प्रयत्न स्त्री विमर्श की नवीन दृष्टि का प्रोत्साहक

होता है, साथ ही स्त्री विमर्श के विकास की नवीन सम्भावनाओं का एवं भविष्य का भी संकेत कराता हैं।' आज की अधिकांश पढ़ी-लिखी स्त्री विचारशील होने का दावा करती हुई स्त्री-समाज, स्त्री-स्वतंत्र्य, स्त्री समानता और अधिकारों की लड़ाई लड़ते हुए भी नहीं जानती कि वे अधिकार वस्तुत: क्या हैं, कैसे होने चाहिए, किस रूप में होने चाहिए। स्त्रियों को शिक्षित किए बिना उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ना सम्भव नहीं, स्त्रियों को जागृत और सचेत बनाने की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

आधुनिक काल की स्त्री लेखिकाओं में अनामिका का एक विशिष्ट स्थान है। अनामिका ने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में सृजन कर अपनी सृजनधर्मिता का बखूबी निर्वहन किया है। स्त्री विमर्श के स्वरूप पर अनामिका ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा है कि- "शुरूआती दौर में यह स्त्री पुरुष सम्बंधों, स्त्री की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं तथा समाज के उपेक्षित वर्गों की समस्याओं तक ही सीमित था, मूलत: स्त्री केन्द्रित ही था, लेकिन अब इसकी दृष्टि व्यापक हो गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर जितनी भी घटनाएँ घट रही है, उन सबकी चिन्ता भी इसके केन्द्र में है। सम्बन्धों में संवेदना का ह्रास और उसके कारण विघटन की जो स्थिति बनी है, इसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण है और स्त्री विमर्श उसी का निवारण मनोवैज्ञानिक तरीके से चाहता है। हिंसा का बदला हिंसा से नहीं लिया जा सकता। मनुष्य स्वभाव से इतना क्रूर और हिंसक जो हो गया, बचपन से मन में पड़ी किसी कुंठा का ही परिणाम है। स्त्री विमर्श मानव के मन में आशा का संचार करना चाहता है। फिर से मानवीय मूल्यों से संपृक्त करना चाहता है। आशावादिता इसका मूलमन्त्र है।"

वास्तव में नारी समाज का आधा हिस्सा और समाज की उन्नति अवनति का मापदंड हैं। वह साहित्य, संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। "वह उच्च मानवीय गुणों और आदर्शों का अजस्र स्रोत हैं। वह पुरुष की प्रेरणा, साथी, मार्गदर्शक, संरक्षक हैं। उसके बिना सृष्टि, सभ्यता, संस्कृति और पुरुष के जीवन में वह स्थान नहीं दिया जाता, जिसकी वह हकदार हैं। पुरुष प्रधान सनातनी समाज व्यवस्था नारी को सदैव

उसके अधिकारों से वंचित रखकर उसे मात्र भोग का साधन बनाती है।" जो वर्तमान सन्दर्भों के उचित मापदण्ड नहीं है। आज भारत वर्ष में नारी को भोगवादी वस्तु के रूप में देखना सामाजिक बदलाव की ओर इंगित करता है। स्त्री विमर्श में अनामिका उनकी उपलब्धियों के बारे में प्रकाश डालते हुए कहती है कि- "स्त्री विमर्श की सबसे बड़ी उपलब्धि ही यही है कि अपनी खुदी की चेतना जागी है। हर वर्ग, धर्म जाति के लोगों में एक नयी चेतना जाग्रत हुई हैं। यहाँ तक की सड़क पर रहने वाली स्त्री भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठी हैं।" घर और परिवार में स्त्री पर अत्याचार होता ही रहता हैं। अत्याचार के प्रति विद्रोह के स्वर हमें अनामिका की कविताओं में मिलते है, जहाँ स्त्री प्रश्न कर रही है-

"शायद यह घर मेरा है,

किसका है ये ज़लज़ला?

X X X

ये मालिक क्या होता है?

क्या होता है किसी का होना?

X X X

बहुत प्यार करता है जो मुझको

किसका है?

किसकी है तनी हुई भौवें

और किसका है

यह मुझ पर लहराता चाबुक है?"

पारिवारिक घुटन और संत्रास से व्यथित मन घर की जड़ चीजों में भी आत्मीयता खोजकर प्रश्न करने लगता हैं। अनामिका की 'फर्नीचर' कविता स्त्री के इन्हीं सवालों को वाणी देती है, जिसमें फर्नीचर से प्रश्न पूछती है स्त्री-

"मैं उनको रोज झाड़ती हूँ

पर वे ही है इस पूरे घर में

जो मुझको कभी नहीं झाड़ते।"

लेकिन मन में व्याप्त भय उनकी पंक्तियों में ऐसे व्यक्त होता है-

'जब आदमी ये हो जाएँगें,

मेरा रिश्ता इनसे हो जायेगा क्या

वो ही वाला

जो धूल से झाड़न का?"

जब परिवार में स्त्री का दर्जा दोयम हो, घर और बच्चों की देखभाल तक उसकी जिम्मेदारी सीमित हो, उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व न विकसित हो सकता हो, तब वह परिवार में उपस्थित होकर भी स्वयं को अनुपस्थित समझने लगती है। ऐसी ही अभिव्यक्तिपरक अनामिका की एक कविता देखें -

"लोग दूर जा रहे है

हर कोई किसी से दूर

लोग दूर जा रहे है

और बढ़ रहा है

मेरे आस-पास का स्पेस।"

स्त्री विमर्श पर मंजु रुस्तगी ने कहा है कि- "स्त्री विमर्श और कुछ नहीं आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकार की पहल का दूसरा नाम हैं। स्त्री विमर्श वस्तुत: स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद की संकल्पना है। फिर भी बीसवीं शती के अन्तिम दो दशक में इस विचारधारा को पनपने का उपयुक्त परिवेश मिला।"

भारतीय समाज में घरेलू हिंसा प्राय: अनाचार के रूप में सार्वभौमिक रूप से विद्यमान है। "उत्पीड़न, प्रताड़नाओं और अवहेलनाओं के कंटीले तारों से बींधता स्त्री जीवन का यह अध्याय तब तक समाप्त नहीं हो सकता जब तक शोषणकर्ता अपनी संवेदनहीनता को त्याग न दें। इसका सीधा सा रास्ता ही महिलाओं पर चोट करना है ऐसा नहीं की सभी पुरुष शोषणकर्ता है क्योंकि अगर ऐसा होता तो उच्च पदों पर आसीन महिलायें नहीं होती। क्या विश्व का कोई भी पुरुष पूर्ण विश्वास से यह कह सकता है कि स्त्री के ममत्व और स्नेह के बिना अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया।" घरेलू हिंसा आज घर-घर की कहानी है। परिवार में खटर-पटर होती ही रहती है। भारतीय समाज में विवाह को एक संस्कार के साथ जोड़ा गया है, इसलिए उसमें विसंगतियाँ भी है। विवाह सम्बन्धों में स्त्री की दयनीय स्थित का वर्णन करते हुए अनामिका लिखती है-

"पीठ नीली

चेहरा पीला

लाल आँखें और

जख्म हरे

कुदरत के सब रंगों की बोतल

उलट-पलट जाती है मुझ पर

उनके आती ही।"

एक अजीब से विरोधाभास में जीती है स्त्रियाँ। अनामिका की कविताओं में भारतीय परिवारों में स्त्री के दुखद स्वरूप हो उद्घाटित करती हैं-

"घर में घुसते ही

जोर से दहाड़ते थे मालिक और

एक ही डाँट पर

एकदम पट्ट

लेट जाती थी वे

दम साध कर।"

एक और अन्य कविता में भी इसी प्रकार की स्थिति का वर्णन हुआ है-

"हाँ, तुम्हारा पिन-कुशन हूँ-

हर नुकीली बात तुम मेरे हृदय में घोंपकर

फ़ासलों की फाइलें बढ़ाते हुए।"

स्त्री परिवार के लिए समर्पित रहती है। पत्नी और माँ के बीच वह अपने कर्त्तव्यों का वहन करते हुए अपनी इच्छाओं का दमन कर देती हैं। अनामिका ने स्त्री की बेचैनी को व्यक्त करते हुए लिखा है-

"एक दिन पुच्छल तारे की बेचैनी में

सिर धुनकर

बृहस्पति से टकराने से पहले

मैंने सोचा-

मेरे पीछे इतने बड़े कुनबे का

आखिर क्या होगा?

यह सोचकर मैंने टक्कर स्थगित की,

और मन बदलने की खातिर

घर की छोटी-मोटी चीजों के बारे में

सोचने लगी।"[17]

अनामिका स्त्री के दुख या अवसाद को भी साझा करने की क्षमता रखती हैं। यह क्षमता इस कविता में देखें-

‘‘वह बिल्कुल अनजान थी

थकी दिखती थी वह,

फिर भी वह हँसी।

उस हँसी का न तर्क था, न व्याकरण,

न सूत्र, न अभिप्राय !

उसने फिर हाथ भी बढ़ाया,

और मेरी शॉल का सिरा उठाकर

उसके सूत किये सीधे

उसके उन झुके हुए कन्धों से

मेरे भन्नाए हुए सिर का

बेहद पुराना है बहनापा !"

समाज में अपनी ‘जगह' की खोज और समाज द्वारा परिष्करण की प्रक्रिया- इसी द्वन्द्व में स्त्री का अन्तर्जगत से उसका सम्बन्ध भी परिभाषित होता है ! ‘बेजगह' कविता में अनामिका कहती है-

‘‘अपनी जगह से गिरकर

कहीं के नहीं रहते

केश, औरतें और नाखून।"

स्त्री मन की पीड़ा के साथ-साथ उनके मन में उठने वाले सवालों से भी अनामिका अनजान नहीं है, वह जानती है तभी तो कहती है-

“सिर पर जितने बाल,

उससे कुछ ज्यादा सवाल।"

अनामिका मानती है कि स्त्री की शारीरिक संरचना उसे समाज में शोषितों की श्रेणी में खड़ा कर देती है। सामाजिक ताने बाने में स्त्री की असुरक्षा को अनामिका ने अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए लिखा है-

“बेथलेहम और यरूज़लम के बीच

कठिन सफर में उनके

हो जाते कई बलात्कार।"

अनामिका के काव्य में स्त्री की संवेदना के जो रूप व्यक्त हुआ है उससे ज्ञात होता है कि आज की नारी आधुनिकता के नाम पर भी रूढ़िवादी विचार धारा से घिरी हुई है।

अनामिका के काव्य पर शोधकार्य करने की दृष्टि से मैंने इसे सात अध्यायों में विभाजित किया हैं।

प्रथम अध्याय 'स्त्री विमर्श अर्थ एवं स्वरूप' नाम से है। इसमें मैंने स्त्री विमर्श का अर्थ एवं परिभाषा, स्त्री विमर्श का इतिहास, स्त्री विमर्श की भारतीय अवधारणा, स्त्री विमर्श की पाश्चात्य अवधारणा एवं स्त्री विमर्श की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा में अन्तर का वर्णन किया है।

द्वितीय अध्याय 'हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श' नाम से है। इसमें मैंने हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श का स्वरूप, वैदिक काल एवं आदि काल में स्त्री विमर्श, भक्तिकाल में स्त्री विमर्श, रीतिकाल में स्त्री विमर्श, आधुनिक काल में स्त्री विमर्श को विवेचित किया हैं। इसी अध्याय में हिन्दी काव्य में स्त्री विमर्श की परम्परा में अनामिका का स्थान शीर्षक के उनके काव्य के आधार पर उनकी साहित्य में क्या स्थिति है को वर्णित किया है।

तृतीय अध्याय 'अनामिका का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' नाम से है। इसमें मैंने अनामिका के जीवन से सम्बन्धित तथ्यों तथा उनके कृतित्व का वर्णन प्रस्तुत किया है। अनामिका का जन्म, माता-पिता पूर्वज आदि, शिक्षा विवाह, संतति, अनामिका का ग़द्य साहित्य, अनामिका का पद्य साहित्य, अनामिका का अन्य साहित्य इसी अध्याय में वर्णित किया हैं।

चतुर्थ अध्याय 'अनामिका के काव्य में वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श' नाम से है। इनमें मैंने अनामिका के काव्य में स्त्री की अस्मिताबोध, यौन स्वातंन्त्र्य स्त्री, स्त्री मुक्ति, भूमण्डलीकरण का प्रभाव, आशावादिता, वैयक्तिक प्रेम एवं पारिवारिक संबंध के बारे में वर्णित किया हैं।

पंचम अध्याय 'अनामिका के काव्य में स्त्री का व्यक्तिगत जीवन' नाम से है। इसमें अनामिका के काव्य में निहित नारी जीवन के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बताया गया है। जैसे प्रथम स्राव, गर्भिणी स्त्री, प्रसवकालीन स्त्री एवं स्त्री के जीवन के अन्तिम स्राव के बारे में वर्णित उनकी अनुभूतियों के काव्यमय तथ्यों को प्रस्तुत किया हैं।

षष्ठम् अध्याय 'अनामिका के काव्य की सृजन समीक्षा' नाम से है। इसमें मैंने अनामिका के काव्य की संवेदनात्मक चित्रण, समस्यात्मक चित्रण, परिस्थिति चित्रण, यथार्थ चित्रण एवं अभिव्यक्ति पक्ष का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया हैं।

सप्तम एवं अन्तिम अध्याय 'उपसंहार' नाम से है। इसमें मैंने सम्पूर्ण काव्य का सार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दी है।

****